अध्याय पहला

ग्रामीण जीवन का परिचय

ग्राम : स्थिति - समस्याएँ --

भारत वर्ष के साथ ग्राम का अनन्य सम्बन्ध जुडा हुआ है। भारत सदा से ही भूमि पर आधारित देश रहा है। यहाँ की सभ्यता और संस्कृति के केन्द्र ग्राम ही थे। भारत के किसी भी दशा का अध्ययन करने के लिए हमें भारत के ग्रामों का अध्ययन पहले करना होगा।

" आज वैज्ञानिक और प्रगतिशील युग में भी जिस प्रकार भारतीय ग्रामों की उन्नति की विभिन्न योजनाएँ बन रही हैं, उनके विकास के लिए आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रुप से जो सामूहिक प्रयत्न किए जा रहे हैं -- वे इस बात के जीवित प्रमाण है कि भारतीय जीवन का आधार एक मात्र ग्राम है। ग्रामों के इस महत्व को विदेशी शासक अँग्रेजों ने भी खूब अच्छीतरह समझा था इसी कारण देश की अवनति और विपन्नता के लिए उन्होंने यहाँ के ग्राम संगठनों पर कुठाराघात किया। ग्राम्य जीवन की विशृंखलता से ही देश की समृध्दि समाप्त हुई, जीवन का संतुलन समाप्त हुआ देश की एकता और स्वतंत्रता समाप्त हुई। एक प्रकार से देश के ये ग्राम ही देश की शक्ति और संगठन के आधार थे।" [१]

"जहाँ तक "ग्राम" शब्द की व्युत्पति का सम्बन्ध है, पाणिनी ने ग्राम को एक स्वतंत्र धातु ही स्वीकार किया है जिसका अर्थ होता है "आमंत्रण"।[२]

---

१ डॉ.ज्ञान अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें -पृ.३१
जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार,मथुरा-२,
प्रथम संस्करण - १९७९

२ पाणिनी - अष्ठाध्यायी,अध्याय-५,प्रकरण-२,पद-१०,पृ.८९६
संपादक और अँग्रेजी में अनुवादक,लेटे श्रीसाचन्द्रवासु,भाग-२
मोतीलाल बनारसीदास,इन्डोलॉजिकल पब्लिशर्स अँन्ड बुक-सेलर्स, ए अलहा मार्ग,जवाहरनगर दिल्ली-७,प्रथम आवृत्ति अलाहाबाद-१८९१,पुनर्मुद्रित-दिल्ली-१९६२,१९७७,

' अंग्रेजी भाषा के आधारपर ' ग्राम ' वह भूमि खण्ड हुआ जो ' हैम्लेट ' अर्थात् ' परवा ' से कुछ छोटा हो तथा जहाँ छोटे - छोटे घर बसे हों। आधुनिक युग में हिन्दी में ' ग्राम ' का रूप प्रचलित है वह अंग्रेजी ' विलेज ' के अनुरूप है'[१]।

इस तरह स्पष्ट दिखायी देता है कि ' ग्राम ' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में मिलता है।

' इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में भी ग्राम में प्राय: निम्न श्रेणी के लोग रहते थे। जो जातिगत पेशा करते थे। '[२]

' ग्राम के समीप की भूमि उपजाऊ कहलाती थी।' [३]

' निवास के योग्य स्थान को सन्निवेश और निकर्णि कहते थे। अर्थात् जिस भूमि को देखकर चित्त प्रसन्न हो आकर्षित हो।'[४]

' मानव की सभ्यता और संस्कृति का इतिहास बताता है कि संसार में मानव के अस्तित्व के साथ ही ग्रामों का उदय हुआ। हाँ कालक्रमानुसार उसके संगठन का रूप अवश्य बदलता रहा[५]।'

---

१ डॉ.ज्ञान अस्थाना : हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.३३
जवाहर पुस्तकालय,सदर बाजार,मथुरा-२,प्रथम सं.१९७९

२ डॉ.ज्ञान अस्थाना : हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.३३
जवाहर पुस्तकालय,सदर बाजार,मथुरा-२,प्र.सं.१९७९

३ राम शंकर त्रिपाठी : हिस्ट्री आफ ऐन्शेन्ट इंण्डिया - पृ.१०८
मोतीलाल बनारसीदास,इन्डोलौजिकल पब्लिशर्स
अैन्ड बुकसेलर्स बंगला रोड,जवाहर नगर,दिल्ली-७,
प्र.सं.१९४२, पुनर्मुद्रित - १९६०,१९६७,१९७७

४ डॉ.ज्ञान अस्थाना : हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याये - पृ.३३
जवाहर पुस्तकालय,सदर बाजार,मथुरा-२,प्र.सं.१९७९

५ डॉ.ज्ञान अस्थाना : हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याये - पृ.३४-३५
जवाहर पुस्तकालय,सदर बाजार,मथुरा-२,प्र.सं.१९७९

प्रारंभ में मानव जब इस सृष्टि पर अवतरित हुआ तो वह अपने उदर-निर्वाह के लिए फल तथा पशु-पक्षियों की शिकार करता हुआ इधर-उधर भटकता होगा। पहले वह केवल अपने परिवार के सीमित जीवों के साथ रहा होगा। जब वह एक स्थान पर रहने लगा होगा तब उसका परिवार एक विशिष्ट उपजाऊ भूमि पर निर्भर रहता होगा। अनेक ग्रंथों से ज्ञात होता है कि भटकते हुए मनुष्य को एक स्थान पर बसा कर कुल का रूप प्रदान करने में कृषि को विशिष्ट रूप से श्रेय प्राप्त हुआ है।

परिवार सामाजिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग होता है। अनेक परिवार इकठ्ठा होकर ग्राम का रूप धारण कर लेता है और इसप्रकार ग्राम से विश और विश से जन का विकास होता है। लेकिन इनका परस्पर सहसंबंध ज्ञात नहीं।[१]

इस आधारपर अनुमान सहज ही है कि जहाँ कहीं कोई जत्था टुकडी बस जाती थी वही भूखण्ड ग्राम का रूप धारण कर लेता था।[२]

वैदिक काल में ग्राम --

वैदिक युग में जीविकोपार्जन के मुख्य साधन केवल दो ही थे - कृषि और पशुपालन

कृषि जैसा ही पशु पालन को भी महत्व दिया जाता था। पशुपालन उदर - निर्वाह का प्रमुख साधन माना जाता था।[३]

---

१ बी.एन.लुनिया : लाईफ अैन्ड कल्चर इन ऐन्शेन्ट इंडिया - पृ.८२
लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, हॉस्पीटल रोड, आगरा-३
प्रथम संस्करण - १९७८.

२ डॉ.ज्ञान अस्थाना : हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.३६
जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा-२, प्रथम सं.१९७९

३ बी.एन.लुनिया : लाईफ अैन्ड कल्चर इन ऐन्शेन्ट इण्डिया - पृ.८९
लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, हॉस्पीटल रोड, आगरा-३
प्रथम संस्करण - १९७८

" बड़े और भारी हल चौबीस बैलों से खींचे जाते थे। अनेक प्रकार के अन्न तथा उसके बोने की वस्तुओं का उल्लेख मिलता है।"[१]

" लोथों की मुख्य सम्पत्ति पशु पालन ही थी। इसके अतिरिक्त वे कृषि पर भी अवलंबित थे।"[२]

इससे स्पष्ट होता है कि उस समय भी कृषि की उन्नति सर्वोपरि समझी जाती थी और कृषि विज्ञान भी लोग जानते थे।

" कृषि की भूमि व्यक्तिगत पारिवारिक सम्पत्ति समझी जाती थी। युध्द में जीती हुई भूमि पर राजा का अधिकार नहीं होता था। वह भूमि जन " में बाँट दी जाती थी। राजा पराजित राजा की ओर से कर लिया करता था[३]।

" जन " का मुखिया राजा होता था किन्तु राज्य कार्य में उसका स्वेच्छाचार नहीं चलता था। विश या प्रजा राजा का वरण करती थी। विश व्दारा चुना हुआ राजा समस्त राष्ट्र की सम्पत्तियों को प्रजा में बाँट देता था[४]।

---

१ बी.एन.लुनिया : लाईफ अैन्ड कल्चर इन ऐन्शेन्ट इण्डिया, पृ.८९
लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, हॉस्पीटल रोड, आगरा-३
प्र.सं.१९७८

२ रामचंद्र घोष : हिस्ट्री आफ हिन्दु सिविलायझेशन - पृ.१४३
सुशाल प्रकाशन, ९। ५३९६, वेस्ट सिलामपूर गांधीनगर,
दिल्ली -३१, आवृत्ति :१९८७

३ बी.एन.लुनिया : लाईफ अैन्ड कल्चर इन ऐन्शेन्ट इण्डिया - पृ.८४
लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, हॉस्पीटल रोड, आगरा-३
प्रथम संस्करण -१९७८

४ बी.एन.लुनिया : लाईफ अैन्ड कल्चर इन ऐन्शेन्ट इण्डिया - पृ.८२
लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, हॉस्पीटल रोड, आगरा-३
प्रथम संस्करण १९७८